गलातियों

के नाम प्रेरित पौलुस की पत्री

फ्रैंकलीन के द्वारा अध्ययन

I. परिचय

पौलुस गलातियों को पत्री लिखते समय मसिहयत और सुसमाचार के विषय में उनकी समझ को संबोधित करता है। इसलिए यह सुसमाचार के सन्देश को स्पष्टता से समझने के लिए बहुत उत्तम अध्ययन है।

गलातियों की पत्री ने मार्टिन लूथर को इस निष्कर्ष पर पहुँचने में सहायता की कि **हमारा उद्धार केवल विश्वास से हुआ है**। मैथोडिस्ट चर्च के संस्थापक जॉन वेस्ली ने यह समझ मार्टिन लूथर द्वारा लिखी गलातियों की कमेंट्री पढ़कर प्राप्त की।

गलातियों की पत्री को इसलिए जाना जाता है कि यह हमें बताती है कि हमें व्यवस्था के बदले आत्मा के द्वारा जीवन जीने और चलने तथा आत्मा का फल लाने को स्थान देना चाहिए। हर एक विश्वासी के लिए इस पत्री को समझना और यह जानना बहुत ज़रुरी है कि: “इसलिये अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बंधुआई में जाती है”। यशायाह ५:१३

गलातियों 1:1-2 पौलुस की, जो न मनुष्यों **की ओर से**, और न मनुष्य के द्वारा, वरन यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिस ने मरे हुओं में से जिलाया, प्रेरित है। (2) और सारे भाइयों की ओर से, जो मेरे साथ हैं; गलातिया की कलीसियाओं के नाम।

पौलुस ने बहुत से गलातियों को मसीह के लिए जीता था, और फिर अपनी बाद की मिशन यात्राओं में उसने उन्हें शिक्षाएं दीं। परंतु अब पौलुस ने यह सुना कि कुछ यहूदीवादी मसीहियों ने आकर इन अन्य जाति विश्वासियों को यह कहकर बहकाना आरंभ कर दिया कि जब तक वे खतना करा कर मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं करते तब तक **उनका उद्धार नहीं हो सकता।**

इन झूठे शिक्षकों ने पौलुस के अधिकार और शिक्षा के विरुद्ध बात की। और फिर ये नए विश्वासी असमंजस्य में पड़ गए और **मसीह में अपने विश्वास से वापस व्यवस्था पालन करने की ओर जाने लगे।**

अत: पौलुस इन विश्वासियों को लिखता है और उन्हें यह बताता है कि उसकी प्रेरिताई उच्च दर्जे की है, और यह भी कि उसे स्वयं उस स्रोत अर्थात सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर की ओर से भेजा गया है - जो न मनुष्यों **की ओर से**, और न मनुष्य के द्वारा, वरन **यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा** (प्रेरितों के काम 9:1-22 भी देखें)

गलातियों 1:3-5 परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। (4) उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए। (5) उस की स्तुति और बड़ाई, युगानुयुग होती रहे। आमीन।।

पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, यह परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र द्वारा किए गए उद्धार के कार्य का संक्षिप्त परंतु पूर्ण कथन है।

- कार्य : अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया — धन्यवाद यीशु
- उद्देश्य : ताकि ... हमें छुड़ाए — धन्यवाद यीशु
- समस्या : इस वर्तमान बुरे संसार से — धन्यवाद यीशु

और जब इसको समझा जाता और इस पर विश्वास किया जाता है, केवल इससे, परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती है।

II. सुसमाचार का बिगड़ा रूप

गलातियों 1:6-10 मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस **से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार** के सुसमाचार की ओर झुकने लगे।

- **उससे फिर कर** का अर्थ, **"उससे दूर हो जाना" है**। **उद्धारकर्ता, यीशु मसीह** से **फिरकर दूर** हो जाना **बहुत ही गंभीर** बात है।

- तुम्हें मसीह के **अनुग्रह** से बुलाया (देखें रोमियों 8:28-30) - जो कुछ यीशु मसीह ने अपने अनुग्रह से हमारे लिए किया, **केवल** उसी के कारण हम बुलाए गए हैं; इसलिए **नहीं** कि हमने **कुछ किया है।**

- **और ही प्रकार** के सुसमाचार - यहाँ "और ही प्रकार" के लिए **"हेट्रोस"** यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया जिसका अर्थ, "एक **अलग** ही प्रकार का" है।

(7) **परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं**: **कोई दूसरा सुसमाचार है ही नहीं**। सुसमाचार का अर्थ **"शुभ सन्देश"**, और वे जिसकी ओर मुड़ रहे हैं वो वास्तव में **शुभ सन्देश नहीं** परंतु **बुरा सन्देश** है। उन्हें बताया गया कि यदि वे व्यवस्था का पालन करेंगे तो उन्हें धर्मी समझा जाएगा। और जैसा हम देखते हैं, उनका कहना था कि किसी का उद्धार अनुग्रह के द्वारा नहीं परंतु खतना और व्यवस्था का पालन करने से होता है। यह बुरा सन्देश है क्योंकि कोई भी व्यवस्था का पालन नहीं कर सकता। व्यवस्था का उद्देश्य हमें यह दिखाना था कि हम पापी हैं (रोमियों 3:19-20; 7:5, 7, 9)

पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें **घबरा** (असमंजस्य में डाल) देते, और मसीह के सुसमाचार को **बिगाड़ना** (बदल डालते) चाहते हैं।

- आज कितने लोग असामंजस्य में पड़े है और बिगड़े हुए सुसमाचार को मानते हैं;
- आज के समय में "सुसमाचार के बिगड़े रूप" का कौन सा उदाहरण हैं।

सच्चे सुसमाचार - उस सत्य की शिक्षा देना - - बहुत अवश्य है।

जो कोई सुसमाचार को बिगड़ता है उसको पौलुस कड़ी चेतावनी देता है :

(8) परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, **कोई और** सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो **शापित** हो। (9) जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही **मैं अब फिर कहता हूं,** कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो **शापित** हो।

- पौलुस "किसी और सुसमाचार" के खतरे के विषय में प्रबलता और पूरे जोश के साथ बताता है। वह कहता है कि जो कोई ऐसा करता है वह "शापित" है, जिसका अर्थ है: चर्च में सहभागिता और संगति से अलग होना।

- प्रश्न : पौलुस इस बात पर इतना बल क्यों देता है? वह इतने कड़े और कठोर शब्दों में क्यों बोल रहा है?

- उत्तर : इसकी गंभीरता और भयावहता को गलातियों 3:13 में देखा जा सकता है : मसीह ने जो **हमारे लिये शापित बना,** हमें मोल लेकर **व्यवस्था के शाप** से छुड़ाया है।
    - व्यवस्था के अधीन होने से उद्धार नहीं शाप आता है - **व्यवस्था के शाप**
    - यीशु **हमारे लिये शापित बना ताकि व्यवस्था के शाप** से छुड़ा ले।
    - इसलिए उद्धार के लिए व्यवस्था में वापस जाने का मतलब है कि यीशु ने जो कुछ क्रूस पर किया, उसे बेकार और तुच्छ जानना और इस कारण **व्यवस्था के शाप** में बने रहना। जो उद्धार के लिए यीशु द्वारा किए गए कार्य पर नहीं **अपितु स्वयं पर भरोसा** करना है।

(10) अब मैं क्या मनुष्यों को मानता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता।।

- पौलुस इन कटु और दोष लगाने वाले वचनों से "मनुष्यों को प्रसन्न" नहीं कर रहा था। वह यह कह कर मनुष्यों को प्रसन्न करना नहीं चाहता कि "सब ठीक है" जैसा आज कल के कई पास्टर्स और शिक्षक करते हैं। पौलुस मसीह का सच्चा दास है। यहाँ शब्द (δούλος) का अर्थ **दास** है।

सेवक के लिए दूसरा शब्द है। एक सेवक सेवा करता है लेकिन स्वामी का उस पर अधिकार नहीं होता। एक दास पर उसके स्वामी का स्थायी स्वामित्व होता है और वह बस उसकी आज्ञा मानता है। पौलुस न तो मनुष्यों की सेवा कर रहा है और न ही वह उन्हें प्रसन्न कर रहा है। उसका संबंध केवल अपने स्वामी की आज्ञा मानने से है। (देखें व्यवस्थाविवरण 15:12-17)

- हमें अपने आप से यह प्रश्न पूछना चाहिए, क्या **मैं परमेश्वर** का सेवक हूँ ... या उसका दास?

III. पौलुस अपनी सेवकाई का बचाव करता है

पौलुस की यात्राओं के दौरान अन्य जाति में से विश्वासी बने लोगों के विश्वास को यहूदीवादी विश्वासियों ने चुनौती दी, वे अपनी यहूदी व्यवस्था और खतना के नियमों में केवल मसीह को **जोड़** रहे थे। (किसी अन्य धर्म से मसीही विश्वास में आए लोग भी यही करते हैं)। यह पौलुस द्वारा प्राप्त प्रकाशन से भिन्न था। यह पौलुस की समस्या थी और उसे अपने सुनने वालों को यह निश्चय दिलाना पड़ा कि यह केवल उसका कहना ही नहीं है परंतु यह यकीनन **परमेश्वर** का प्रकाशन है।

हमें अपने विश्वास के **सही स्रोत** का पता लगाना **बहुत आवश्यक** है और साथ ही यह भी कि हमारा आधार न सिर्फ सही इतिहास से हो, परंतु आधुनिक अनुसन्धान और रिपोर्ट पर भी आधारित हो।

मसीही शिक्षा इन स्रोतों पर आधारित है:

1. पुराने नियम का प्रकाशन
2. अपने ग्यारह शिष्यों को दी गई परमेश्वर के पुत्र **यीशु** की अधिकार पूर्ण शिक्षा, जिसे सुसमाचारों और पत्रियों में लिखा गया है।
3. प्रेरित पौलुस को मिला व्यक्तिगत प्रकाशन

एक बुद्धिमान व्यक्ति किसी भी पढ़ी तथा बतायी गई बात को सच मानने से पहले **उसके स्रोत** पर प्रश्न करेगा और उसकी जाँच करेगा। अनन्त जीवन और पापों की क्षमा के विषय में जो हम सच मानते हैं, उसके विषय में भी यह बात विशेषकर सच ठहरती है।

बाइबल के अधिकार, उसके स्रोत और उसके सन्देश को समझने के लिए मैं आपको "**बाइबल बेजोड़ है** " (Bible Uniqueness) के नोट्स पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करूँगा, जो हमारी वैब साईट : www.treasurehisword.com पर उपलब्ध है।

गलातियों 1:11-24 हे भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि **जो सुसमाचार** मैं ने सुनाया है, वह **मनुष्य का सा नहीं**। (12) क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, **पर यीशु मसीह के प्रकाश से मिला।**

- पौलुस के लेखों को ध्यान से पढ़ने और अध्ययन करने के बाद इसकी जटिलता और निरंतरता के कारण इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि उसका सुसमाचार मनुष्यों की ओर से नहीं।

(13) यहूदी मत में जो पहिले मेरा चाल चलन था, तुम सुन चुके हो; कि मैं परमेश्वर की **कलीसिया को बहुत ही सताता** और **नाश** करता था। (14) और अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे यहूदी मत में बढ़ता जाता था और अपने पूर्वजों की **परम्पराओं** के लिए **बहुत ही उत्साहित** था।

- पौलुस यह इसलिए बताता है ताकि गलातियों के लोग परम्परावादी यहूदी धर्म जिसमें व्यवस्था और खतना शामिल था, के प्रति उसकी पूर्व भक्ति और पूर्ण समर्पण को देख सकें। और उसके बाद यीशु मसीह के प्रकट होने के बाद उसमें आए पूरे बदलाव के साथ उसकी तुलना करें। जब वह मसीहियों को पकड़ने के लिए दमिश्क जा रहा था तो नगर के बाहर वह यीशु को देखकर भूमि पर गिर गया था (प्रेरितों के काम 9)

(15) **परन्तु** परमेश्वर की, **जिस ने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे चुना** और अपने अनुग्रह से **बुला लिया,**

- हमेशा से परमेश्वर की पौलुस या शाऊल के लिए यही उद्देश्य या योजना थी। आपको यह जानना चाहिए कि अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य और योजना के लिए परमेश्वर ने **आपको भी** आपकी माँ के गर्भ से ही **चुना और बुलाया है** :

  इफिसियों १:४ **जैसा उस ने हमें जगत की उत्पति से पहले उस में चुन लिया** (यह इफिसियों के अविश्वासियों को नहीं बल्कि संतो को लिखा गया था)

  2 तीमुथियुस 1:8-10 ... जिस ने **हमारा** उद्धार किया, और **पवित्र बुलाहट से बुलाया**, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर **अपनी मनसा** और उस अनुग्रह **के अनुसार है** जो मसीह यीशु में **सनातन से हम पर हुआ है।**

  इब्रानियों 2:11-13 क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं: इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। 12 पर कहता है, कि मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा ... 13 ... उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए। (भाइयों - यूनानी भाषा में इसका शाब्दिक अर्थ : एक ही गर्भ से)

(16) जब इच्छा हुई, कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे **कि** मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं; तो न मैं ने मांस और लहू से सलाह ली; (17) और न यरूशलेम को उन के पास गया जो मुझ से पहले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया: और फिर वहां से दमिश्क को लौट आया।।(देखे प्रेरितों के काम 9:19-22)

पौलुस यहाँ यह स्पष्ट करके बता रहा है कि जिस सुसमाचार का वह प्रचार कर रहा है वो किसी दूसरे व्यक्ति की शिक्षाओं से नहीं आईं परंतु उसने यह स्वयं प्रभु यीशु मसीह के प्रकाशन से पाई हैं। तीन दिन अन्धा रहने

के दौरान पौलुस ने यह दर्शन और प्रकाशन पाए थे (प्रेरितों के काम 9:12) कि किस प्रकार यीशु ने पुराने नियम को तथा व्यवस्था को पूरा किया है।

(18) फिर तीन बरस के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम को गया, और उसके पास पन्द्रह दिन
तक रहा। (19) परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला। (20) जो बातें मैं
तुम्हें लिखता हूं, देखो परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता हूं, कि वे झूठी नहीं। (21) इस के बाद मैं
सीरिया और किलकिया के देशों में आया। (22) परन्तु यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थी, मेरा
मुँह तो कभी नहीं देखा था। (23) परन्तु यही सुना करती थीं, कि जो हमें पहिले सताता था, वह अब उसी
धर्म का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहिले नाश करता था। (24) और मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा
करती थीं।।

IV. पौलुस के प्रकाशन की मान्यता और स्वीकृति

गलातियों 2:1-10 यरूशलेम की सभा

चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ यरूशलेम को गया और तितुस को भी साथ ले गया। (2) और मेरा
जाना ईश्वरीय **प्रकाश** के अनुसार हुआ: **और जो सुसमाचार** मैं अन्यजातियों **में प्रचार करता हूं, उस को मैं ने उन्हें बता दिया,** पर एकान्त में उन्हीं को जो बड़े समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो, कि मेरी इस समय की, या पिछली दौड़ धूप व्यर्थ ठहरे। (3) परन्तु **तितुस भी** जो मेरे साथ था और **जो यूनानी है; खतना कराने के लिये विवश नहीं किया गया।**

- पौलुस ने अपने प्रकाशन के बारे में यीशु के शिष्यों को बताया, जिन्हें यीशु ने शिक्षा दी थी और वे इस बात पर सहमत हुए कि पौलुस का सुसमाचार प्रभु की ओर से है तथा उन्होंने उसे स्वीकृति दी। और, उन्होंने उस प्रकाशन में जिसे पौलुस ने पाया था **और जिसकी शिक्षा वह दे रहा था, खतना और व्यवस्था का पालन करना नहीं छोड़ा।**

- यदि उद्धार के लिए खतना ज़रुरी है तो मसीह की मृत्यु के महत्व का क्या?

(4) और यह उन **झूठे भाइयों** के **कारण हुआ,** जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु
में हमें मिली है, **भेद लेकर हमें दास बनाएं।** (5) **उन के आधीन होना हम ने एक घड़ी भर न माना,**
इसलिये कि सुसमाचार की **सच्चाई तुम में बनी रहे।** (6) फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे (वे चाहे कैसे ही
थे, मुझे इस से कुछ काम नहीं, परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता) उन से जो कुछ भी समझे जाते थे,
मुझे कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। (7) परन्तु इसके विपरीत जब उन्हों ने देखा, कि जैसा खतना किए हुए लोगों
के लिये सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया वैसा ही खतनारहितों के लिये मुझे सुसमाचार सुनाना
सौंपा गया। (8) (क्योंकि जिस ने पतरस से खतना किए हुओं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित
करवाया, उसी ने मुझ से भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य करवाया) (9) और जब उन्हों ने उस

अनुग्रह को जो मुझे मिला था **जान लिया,** तो याकूब, और कैफा, और यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ को और बरनबास को **संगति का दहिना हाथ दिया**, कि हम अन्यजातियों के पास जाएं, और वे खतना किए हुओं के पास। (10) केवल यह कहा, कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम के करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था।

इस सभा से पौलुस और बरनबास के अन्यजाति मिशन को यरूशलेम के अगुवों की **स्वीकृति** मिली। इस स्वीकृति में अनेक बातें सम्मिलित थी :

1. **इस बात कि मान्यता मिली कि उनके पास वैध परमेश्वर की बुलाहट है।**

2. **उन्हें भिन्न कार्य क्षेत्रों में एक समान होने की मान्यता मिली।** पतरस को यहूदियों के लिए और पौलुस को अन्यजातियों के लिए।

3. **मित्रता और संगति का हाथ बढ़ाया गया।** "संगति का दहिना हाथ दिए" जाने का अर्थ परस्पर मित्रता का प्रण करना, एक ऐसी रीति जिसकी पुष्टि यहूदी और गैर यहूदी लेखों में की गई है।

V. पौलुस पतरस (कैफा) के कपट को सामने लाता है

गलातियों 2:11-21 पर जब कैफा अन्ताकिया में आया तो मैं ने उसके मुंह पर उसका सामना किया, **क्योंकि वह दोषी ठहरा था।** क्यों? (12) इसलिये कि याकूब की ओर से कितने लोगों के आने से पहिले वह (कैफा) अन्यजातियों के साथ खाया करता था, **परन्तु** जब वे आए, तो खतना किए हुए लोगों के **डर** के मारे उन से हट गया और किनारा करने लगा। (13) **और उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया**, यहां तक कि **बरनबास** भी उन के कपट में पड़ गया। (14) पर जब मैं ने देखा, कि वे **सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते** (यूनानी से शाब्दिक अनुवाद), तो मैं ने सब के सामने कैफा से कहा; कि जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों की समान चलता है, और यहूदियों की समान नहीं तो तू अन्यजातियों को यहूदियों की समान चलने को क्यों कहता है?

- क्या हम बहुत सी बार कैफा के समान ही नहीं करते? एक समूह के साथ इस तरह व्यवहार जिससे हम उनमें स्वीकृत हों और अपने चर्च के मित्रों के साथ दूसरी तरह का आचरण?
    - इसी कारण बहुत सी बार मसीहियों पर पाखंड करने का आरोप भी लगाया जाता है।

- क्या हम दूसरों की चिन्ता किए बिना सच के लिए खड़े रहते हैं ? (देखें, इफिसियों 2:10; 4:1; कुलु 1:10; 2:6; 1 थिस्स 2:12)

- पतरस से इस बात का आना बड़े आश्चर्य की बात थी क्योंकि उसने अन्य समयों में बहुत साहस का परिचय दिया था।

    - एक लंगड़े आदमी को चंगा किया और फिर एक बड़ी भीड़ को सशक्त सन्देश दिया (प्रेरितों के काम 3:6, 11-26), उसे जेल में डाल दिया गया और फिर वहाँ उसने सभी अधिकारियों और प्राचीनों को एक और सशक्त सन्देश सुनाया (4:1-12)।

    - दर्शन पाने के बाद किसी अन्यजाति के घर जाने वालों में से वह पहला था, उसने वहाँ सुसमाचार सुनाया और उन्होंने विश्वास किया, और उसने उन्हें बपतिस्मा दिया।

    - दूसरों के द्वारा अस्वीकार किए जाने का एक बहुत बड़ा दबाव होता है जिसे हम सभी समय समय पर महसूस करते हैं। ध्यान दें, जब यीशु को पकड़ लिया था तो पतरस ने इस बात का इनकार किया कि वह यीशु को जानता है और वह उसके चेलों में से एक है (लूका 22:54+)। यह प्रश्न सदा उठता है : "**हम किसे प्रसन्न करना चाहते हैं?**"

- क्यों पौलुस ने कैफा का सामना अकेले में नहीं वरन सबके सामने किया?

    - यदि वह सबके सामने इस परिस्थिति का सामना नहीं करता तो अन्यजाति का मिशन ठंडा पड़कर मर जाता। यह विषय सुसमाचार के केन्द्र पर था।

- इस तरह के सार्वजानिक विवाद से यहूदी मसीहियों को किस प्रकार लाभ पहुँचा?

    - उन्होंने यरूशलेम से लोगों को, जो कलीसिया के अगुवे थे, इस बात पर सम्मति करते सुना कि खतना और व्यवस्था का पालन करना आवश्यक **नहीं है।**

(15) हम जो जन्म के यहूदी हैं (अर्थात उनके पास व्यवस्था है और वे उसका पालन करने का प्रयास करते हैं), और पापी अन्यजातियों (जिनके पास व्यवस्था नहीं है) में से नहीं।

- यह यीशु के आने से पहले की सोच और परिस्थिति थी। परंतु यीशु ने आकर यह प्रकट किया कि उद्धार केवल विश्वास के द्वारा है (यूहन्ना 3:16)।

(16) तौभी **यह जानकर** कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर **केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है,** हम ने (यहूदी) आप भी मसीह यीशु पर **विश्वास** किया**, कि** हम **व्यवस्था के कामों से नहीं** पर मसीह पर **विश्वास करने से धर्मी ठहरें**; इसलिये कि **व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।**

- बहुत स्पष्ट कथन। धर्मी ठहरने का अर्थ : निर्दोष और धर्मी होने की घोषणा।

(17) हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते हैं, यदि आप ही पापी निकलें, तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं।

- पौलुस यह कह रहा है : यदि मैं अब अपने धर्मी ठहरने के लिए मसीह पर निर्भर होता हूँ, और जान जाता हूँ कि मैं भी अन्यजाति के समान पापी हूँ, जबकि यहूदी होकर पहले मैं अपने आपको पापी के रूप में नहीं देखता था, तो क्या इसका यह अर्थ है कि मसीह ने मुझे पापी ठहरा दिया? नहीं! कदापि नहीं! यह मूर्खता है! (यहाँ पौलुस अपनी स्पष्टता दे रहा है, जैसे उसने रोमियों 6:1-2 में दी थी, जब उसके विरोधियों ने उस पर झूठे आरोप लगाए थे।)

(18) क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया, यदि उसी को **फिर बनाता हूं**, तो अपने आप को **अपराधी** ठहराता हूं।

- पौलुस यह कह रहा है कि धर्मी ठहराए जाने के लिए मसीह पर विश्वास करने के बाद यदि कोई व्यवस्था की ओर मुड़ जाता है ताकि वह धर्मी ठहर सके, तो उसकी व्यवस्था की ओर लौटने की प्रक्रिया उसके अपराध का प्रमाण है। वह कहता है धर्मी ठहराए जाने के लिए यीशु पर विश्वास करने से फिर जाने पर कि व्यवस्था को बढ़ावा देने वाले व्यवस्था को तोड़ने वाले बन गए हैं। क्योंकि ....

(19) मैं जो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिये मर गया, कि परमेश्वर के लिये जीऊं।

- पौलुस का कहने का अर्थ यह है कि वह व्यवस्था का पालन करने के द्वारा स्वयं को बचा सकने की फरीसी और व्यवस्था में बंधी विचारधारा के लिए मर चुका है। वह अब से व्यवस्था से बंधी उद्धार की समझ के लिए सदा मरा है। उसके लिए यह अब अनुग्रह है - पूर्ण अनुग्रह - अनुग्रह जिसे वह "व्यर्थ नहीं" ठहराएगा (2:21)।

  रोमियों 7:4 इसलिए हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए,

  इफिसियों 2:14-15 क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी, **ढा दिया।** (15) **और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था** जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया,

(20) **मैं** मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर **मसीह मुझ में जीवित है,** और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल **उस विश्वास से जीवित हूं**, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, **जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।** (21) मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, **क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।।**

- **क्रूस पर चढ़ाया गया हूं,** इस क्रिया का काल "कर्मवाच्य" है जिसका अर्थ है कि क्रिया भूतकाल में हो चुकी है (जब मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया था) जिसका परिणाम अब वर्तमान काल में भी जारी है, अर्थात - मैं अभी भी क्रूस पर चढ़ा हूँ - मरा हुआ

रोमियों 5:8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी **मसीह हमारे लिये मरा**। **अत: हम मर चुके हैं!**

यह सच सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में बहुत आवश्यक सिद्धान्त है।

1 कुरिन्थियों 15:45 **प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम** ("प्रथम" या जो उससे जन्मे है उन सबका "प्रधान"), जीवित प्राणी बना (हम भी, "जो उससे हैं", जीवित प्राणी बन जाते हैं) और **अन्तिम आदम** (जो उससे जन्में हैं उन सबका "प्रधान"), जीवनदायक आत्मा बना (जो उससे जन्में हैं वे जीवन की आत्मा प्राप्त करते हैं)।

1 कुरिन्थियों 15:47 **प्रथम मनुष्य** धरती से अर्थात् मिट्टी का था; **दूसरा मनुष्य** स्वर्गीय है।

"**जिससे आप हैं**", आपके "प्रधान" को, जो कुछ होता है, वही आपके साथ भी होता है, या वही आपके लिए भी सच है। जैसे :

रोमियों 5:12 इसलिये जैसा **एक मनुष्य** के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से **मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई**, इसलिये कि सब ने पाप किया।

- "पाप किया" के लिए यूनानी शब्द ओरिस्ट टेंस में है; जिसका अर्थ है कि "पाप" किए जाने की क्रिया भूत काल में एक ही बिन्दु पर हुई। अर्थात - **जब आदम ने पाप किया तो सबने पाप किया,** हमारी जाति का "प्रधान"।

- यह सत्य पौलुस के इस कथन को अच्छे से समझने में सहायता करता है : **मैं** मसीह के साथ क्रूस पर **चढ़ाया गया हूं** । विश्वासी होने के नाते पौलुस यीशु मसीह की "प्रधानता" के आधीन था। और जो कुछ यीशु के साथ हुआ वही पौलुस पर भी लागू होता है - और सभी विश्वासियों पर भी लागू होता है।

  2 कुरिन्थियों 5:14 ... जब **एक सब के लिये** मरा **तो सब मर गए**।

  इसलिए पौलुस यह कह सका : **मैं** मसीह के साथ क्रूस पर **चढ़ाया गया हूं** ।
  और हर एक विश्वासी भी यह कह सकता है : **मैं** मसीह के साथ क्रूस पर **चढ़ाया गया** हूं

  1 कुरिन्थियों 15:22 और जैसे **आदम में** सब मरते हैं, वैसा ही **मसीह में** सब जिलाए जाएंगे।

  इसलिए यीशु की मृत्यु पौलुस की मृत्यु थी, और यीशु का पुनरुत्थान पौलुस का पुनरुत्थान था। और वह कह सका : अब मैं जीवित न रहा, पर **मसीह मुझ में जीवित है**

और यह हर एक विश्वासी के लिए **सच** है !

इस सच को जी कर - इस सच को अपने जीवन में वास्तविकता बना कर - आपको हर एक बात पर विजय और स्वतंत्रता मिल सकती है।

उदाहरण के लिए: आप किसी मुर्दे को लात मारे, घूंसे मारें और वह क्या करेगा? कोई प्रतिक्रिया नहीं! आप **मसीह के साथ क्रूस पर** चढ़ाए गए हैं, आप मर चुके हैं। **परंतु मसीह आप में जीवित है** और **यदि** :

1. आप "जानते" हैं कि आप मरे हुए हैं (रोमियों 6:6-9 को देखें), और
2. आप इस सत्य पर "कार्य" करते हैं - उसे अपने जीवन मे सच बनाते हैं (रोमियों 6:11) - इसका अर्थ "अपने क्रूस को उठाना," फिर ....
3. "मसीह आप में अपना जीवन जी सकता है" और **वह** अपना दूसरा गाल भी आगे कर देगा, अपना कोट दे देगा, और अतिरिक्त मील भी चला जाएगा।

पवित्र आत्मा से **कहें** कि जब भी कोई किसी भी तरह से आपको चोट पहुंचाता है तो इससे पहले आप उसका प्रतिउत्तर दें वह आपको गलातियों 2:20 **स्मरण दिलाए।**

जो पद कंठस्थ करके आपकी सहायता करेगी वह है : 1 पतरस 2:21-23

- **अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, अपने कार्यों पर विश्वास करने से नहीं**। यदि आप "मसीह में विश्वास द्वारा नहीं जीते" तो आप **परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ ठहराते** हैं, व्यर्थ ठहराने का अर्थ हैं कि जिसे रद्द कर दिया और जो आपके लिए बेकार है और इसलिए यदि आप मानते हैं कि **व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती** है, **तो मसीह का मरना** आपके लिए **व्यर्थ है।।**

- जिस ने **मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।** इस सत्य को जानना और इस पर विश्वास करना - कि वह आप से प्रेम करता है और उसने आपके पापों को ले लिया और वह आपके स्थान पर, आपके लिए मर गया - परमेश्वर के पुत्र, यीशु पर विश्वास और भरोसा करने की प्रेरणा है।

गलातियों अध्याय ३ मे गलाती वासियों को यह सिद्ध करने के लिए कि उद्धार विश्वास से है व्यवस्था से नहीं, **पांच दलीलें दी गईं हैं।**

दलील 1: विश्वास धार्मिकता को उत्पन्न करता है

गलातियों 3:1-5 हे निर्बुद्धि गलतियों, किस ने तुम्हें मोह लिया? तुम्हारी तो मानों आंखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया!

- हे निर्बुद्धि गलातियों, पौलुस उन्हें "निर्बुद्धि" कह कर उन पर कड़ा प्रहार करता है।
- किसने, तुम किसको सुन रहे हो? तुम्हें इस सत्य की शिक्षा देने के लिए मुझ से बेहतर योग्यता का किसका अधिकार है।
- मोह लिया का अर्थ किसी ऐसी वस्तु पर विश्वास करने के लिए छल या धोखा देना, जो सही नहीं है।

(2) मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूं, कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से पाया है, या विश्वास के समाचार से पाया?

- अन्यजाति होने के नाते यह स्पष्ट था कि उन्होंने व्यवस्था के कामों से आत्मा को नहीं पाया क्योंकि उन्हें तो व्यवस्था के बारे में मालुम भी नहीं था।

- और, यह प्रश्न इस तरह पूछा गया है कि उनका "आत्मा को पाना" एक पहचाने योग्य और ऐसी घटना थी, कि जब उन्होंने विश्वास किया तो उनके मन में कोई संदेह नहीं रहा।

(3) क्या तुम इतने **निर्बुद्धि** हो कि आत्मा से आरम्भ करके अब देह की विधि द्वारा **पूर्णता** तक पहुंचोगे?

- पौलुस ने पहले ही स्थापित किया था मनुष्य व्यवस्था के **कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह** पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है (गलातियों 2:16) और अब वह कह रहा है कि व्यवस्था **न** तो मनुष्य को **पवित्र बना सकती** है और न ही किसी को **पूर्णता** तक पहुंचा सकती है।

- आत्मा से आरम्भ - जो आत्मा ने आरम्भ किया है वह उसका कार्य है और वह उसे पूरा करेगा।

- पौलुस यह कह रहा है कि सिर्फ **एक मुर्ख** ही सचमुच यह मान सकता है कि कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा का काम कर सकता है और **पूर्णता** का जीवन जी सकता है।

(4) क्या तुम ने इतने कष्ट व्यर्थ ही उठाए? क्या वे सचमुच व्यर्थ थे?

- इस कथन से यह स्पष्ट है कि उन्होंने अपने विश्वास के कारण अपमान, तिरस्कार और शायद शारीरिक ताड़ना भी सही होगी। और यह कष्ट उठाने का कोई अर्थ नहीं यदि **वे अपने विश्वास से** "व्यवस्था के कामों" की ओर फिर जाएं। यह उनकी मुर्खता को ही प्रमाणित करेगी।

- पौलुस यह भी कहता है: क्या वे सचमुच व्यर्थ थे? उनको यह एहसास दिलाने के लिए कि "ये व्यर्थ **नहीं** थे" क्योंकि जब उन्होंने "आत्मा को पाया" तो उनके जीवन में आए अच्छे और बड़े बदलाव के साथ उनका अनुभव वास्तविक था। तो फिर अब आत्मा से क्यों फिरना?

और अपने दलील के अंत में पौलुस पूछता है :

(5) सो जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ्य के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के सुनने से ऐसा करता है?

- निश्चय ही "आत्मा और चमत्कारों को पाना" कुछ ऐसा है जिसे मनुष्य न तो कर सकता है और न ही करवा सकता है, परन्तु यह परमेश्वर का काम है। "व्यवस्था का पालन करने" से यह नहीं हुआ, वे अन्यजाति लोग थे और व्यवस्था का पालन नहीं करते थे। यह स्पष्ट था कि यह "विश्वास के सुनने" से हुआ।

दलील 2: अब्राहम विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया गया

गलातियों 3:6 इसी प्रकार इब्राहीम ने **"परमेश्वर पर विश्वास किया**, और यह उसके लिए धार्मिकता (उत्पत्ति 15:6) गिनी गई (श्रेय मिला या दी गयी)।"

- अब्राहम गलातियों के विश्वासियों के समान था। वह अपने पिता और परिवार के साथ कसदियों के ऊर नामक नगर में रहता था (उत्पत्ति 11:28), जो मूर्तिपूजकों का देश था, जिनके बारे में कहा गया कि "वे अन्य देवताओं की पूजा करते थे" (यहोशु 24:2)। उसके पास व्यवस्था नहीं थी इसलिए वह उसका पालन नहीं करता था। परमेश्वर ने **उसे चुना** और **बुलाया** और उसके विश्वास, दिए गए प्रकाशन पर **विश्वास करने के कारण** उसे परमेश्वर द्वारा **धर्मी कहा गया**, न कि उसके "कार्यों" के कारण।

(7) अतः यह **जान लो** कि **जो विश्वास करनेवाले** हैं, वे ही अब्राहम की **सन्तान** हैं।

- यहूदी लोग अपने आप को अब्राहम के वंशज के रूप में देखते थे, अत: यह धारणा कि विश्वास के कारण अब्राहम की संतान है, उनके लिए ठोकर का पत्थर था और अब भी है। परंतु परमेश्वर इसी तरह से - अपने परिवार को देखता है - जो विश्वास का परिवार है।
- पौलुस रोमियों के नाम अपनी पत्री में इस विषय पर भी गहराई से बात करता है (रोमियों 4), वह कहता है कि "अब्राहम उन सब का पिता माना गया जो विश्वास करते हैं" और सभी विश्वासी उसकी "संतान" हैं।

(8) और पवित्रशास्त्र ने आरम्भ से यह जान कर कि परमेश्वर **विश्वास के द्वारा अन्यजातियों को धर्मी ठहराएगा**, पहले से ही अब्राहीम को सुसमाचार सुना दिया: "समस्त जातियाँ (यूनानी - एथनोस; जातिय समूह, नस्ल) तुझ में आशिष पाएंगी (उत्पत्ति 12:3)।"

- यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमेशा से परमेश्वर की योजना में था कि वह **सुसमाचार** के द्वारा **विश्वास के द्वारा अन्यजातियों को धर्मी ठहराए।**

- व्यवस्था 400 साल के बाद मूसा के द्वारा आई और उसका उद्देश्य :

1. **हमें यह बताना था कि हम कितने पापी हैं। यह नहीं कि हमें धर्मी ठहराए**
   रोमियों 7:7 तो हम क्या कहें? **क्या व्यवस्था पाप है?** कदापि नहीं! वरन् बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता : व्यवस्था यदि न कहती, " लालच मत कर", तो मैं लालच को न जानता।(8) परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मुर्दा है।(9) मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया।(10) और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी, मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी।

2. **और यह बताना कि हमें उद्धारकर्ता की ज़रूरत है**। गलातियों 3:24

(9) इसलिये **जो विश्वास करनेवाले** हैं, वे विश्वासी अब्राहम के साथ **आशीष** पाते हैं।

- **आशीष** इसलिए पाते हैं क्योंकि हमें विश्वास करने के द्वारा**, विश्वास से धर्मी** ठहराया गया है। और उत्पत्ति 12:2 में उसने अब्राहम से कहा **"मैं तुझे आशिष दूंगा, ... और तू आशिष का कारण होगा।**" हमारी जिम्मेवारी है कि हम यह शुभ सन्देश अर्थात सुसमाचार सुनाने के द्वारा **"आशिष का कारण" हों,** कि **हम व्यवस्था के कामों से नहीं परन्तु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहराए जाते हैं।**

दलील 3: व्यवस्था शाप लाती है

गलातियों 3:10 इसलिये जितने लोग व्यवस्था **के** कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, "जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई **सब** बातों के करने में **स्थिर नहीं रहता**, वह **शापित है**।" (व्यवस्थाविवरण 27:26)

- जो कोई अपने अनंत उद्धार के लिए व्यवस्था की ओर देखता है उसके लिए यह बहुत गंभीर अभियोग है। क्योंकि कोई भी व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई **सब** बातों के करने में **स्थिर नहीं** रह सकता।

(11) पर यह बात प्रगट है कि **व्यवस्था के द्वारा** परमेश्वर के यहाँ कोई **धर्मी नहीं ठहरता**, क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।(हबक्कूक 2:4)

- पुराना नियम जानता था कि यह सच है।

(12) पर **व्यवस्था का विश्वास से कोई सम्बन्ध नहीं**; क्योंकि "जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।" (लैव्यव्यवस्था 18:5)

- पौलुस यही प्रमाण **रोमियों 10:5** में भी देता है: (4) **क्योंकि हर एक विश्वास करने वाले के लिये धार्मिकता के निमित मसीह व्यवस्था का अन्त है।**(5) क्योंकि मूसा ने यह लिखा है कि जो मनुष्य उस धार्मिकता पर जो व्यवस्था से है, चलता है, वह उसी से जीवित रहेगा।

- परंतु उस धार्मिकता को प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि कोई भी पूर्णत: व्यवस्था का पालन नहीं कर सकता। जैसा यीशु ने कहा: मत्ती 5:20 : क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता **से बढ़कर** न हो(वे असफल हुए, जैसा कि यीशु ने कई बार बताया। मत्ती 23:13-29), तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।

हम भी बिना सिद्ध धार्मिकता के थे, वह धार्मिकता जो व्यवस्था में बताई गई थी और हम मृत्यु के शाप के आधीन थे। परंतु शुभ सन्देश यह है कि :

(13) मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, **हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया**, क्योंकि लिखा है, "जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।" (व्यवस्थाविवरण 21:22-23)

- शब्द "**छुड़ाया**" यूनानी में एक्सगोराज़ों है जो ऐक - जिसका अर्थ "में से" या "निकलना" है तथा *एगोराजो* - जिसका अर्थ "खरीद लेना" और "दाम दे कर किसी व्यक्ति या वस्तु का स्वामित्व का अधिकार प्राप्त करना" है।

यीशु मसीह ने धार्मिकता का जीवन जी कर और निर्दोष रह कर **हमारे लिए व्यवस्था को पूर्ण किया।** और उसने **अपनी मृत्यु** के द्वारा **हमें दाम देकर खरीद लिया और "व्यवस्था के शाप" की अधीनता से निकाल लिया है।**

- अत: हमें जीवन पाने के लिए व्यवस्था का पूर्ण रूप पालन करने की आवश्यकता नहीं है।-

और यीशु मसीह ने हमारे लिए क्रूस पर अपनी **मृत्यु के द्वारा पापों का मूल्य चूका दिया है** : ताकि **हमें मृत्यु के शाप की आधीनता से खरीद कर निकाल लाए।**

मसीह ने हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया हैं !

हाल्लेलुयाह

मसीह ने हमें "पाप की मजदूरी" - मृत्यु से - छुड़ा कर हमें जीवन प्रदान कर दिया है। (रोमियों 6:23; 5:6, 8; यूहन्ना 11:25-26; 14:19)

(14) यह इसलिये हुआ, कि **अब्राहम की आशीष** मसीह यीशु **में अन्यजातियों तक पंहुचे**, और हम **विश्वास के द्वारा उस आत्मा** को **प्राप्त** करें, जिस की प्रतिज्ञा हुई है।।

- **अब्राहम की आशीष** का अर्थ **विश्वास द्वारा धार्मिकता** थी

रोमियों 4:3 पवित्र शास्त्र क्या कहता है? यह कि अब्राहम ने **परमेश्वर पर विश्वास किया**, और यह उसके लिये **धार्मिकता** गिना गया।

रोमियों 4:9 तो यह **धन्य कहना**, क्या खतनावालों ही के लिये है, या खतनारहितों के लिये भी? हम यह कहते हैं, कि **अब्राहम के लिये उसका विश्वास धार्मिकता गिना गया**।

- **आशीष ... अन्यजातियों तक पंहुचे**
  रोमियों 4:16 इसी कारण **वह विश्वास के द्वारा** मिलती है, कि **अनुग्रह की** रीति पर हो, कि **प्रतिज्ञा** सब **वंश के लिये दृढ़ हो**, न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्थावाला है, बरन उन के लिये भी जो **अब्राहम के समान विश्वासवाले हैं:** वही तो हम सब का पिता है।

- हम **विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें,** जिस की **प्रतिज्ञा** हुई है। व्यवस्था द्वारा नहीं
  प्रेरितों के काम 2:38-39 पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। (39) क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।

दलील 4. सहने वाली वाचा बनाम अस्थायी व्यवस्था

गलातियों 3:15-29
(15) हे भाइयों, मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं, कि मनुष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है, **तो न कोई उसे टालता है और न उस में कुछ बढ़ाता है।**

- पौलुस यह कह रहा है कि एक दुसरे के साथ की गई वाचा या सहमति का हम आदर करते हैं और उसके प्रति विश्वासयोग्य हैं।

(16) निदान, **प्रतिज्ञाएं** इब्राहीम को, और **उसके वंश** को दी गईं; वह यह नहीं कहता, कि वशों को; जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि **तेरे वंश को: और वह मसीह है।**

- पौलुस यहाँ उत्पत्ति 22:17-18 का उल्लेख कर रहा है : इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा; और निश्चय तेरे **वंश** को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूंगा, और तेरा **वंश** अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा। (18) और पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे **वंश** के कारण धन्य मानेंगी।

जब वचन कहता है: “तेरे **वंश** को आकाश के **तारागण,** और … **बालू** के किनकों के समान अनगिनित करूंगा, और तेरा **वंश** अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा।” तो दोनों बहुवचन उदाहरण हैं और यकीनन इसका अर्थ लोग होगा।

परंतु, जब वचन कहता है : (18) और पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे **वंश** के कारण धन्य मानेंगी। तो पौलुस यहाँ प्रेरणा पा कर व्याख्या करता है कि यह **मसीह** के विषय में कहा गया है।

और ऐसा करके पौलुस इस “वंश” को उत्पत्ति 3:15 के प्रतिज्ञात “वंश” से जोड़ देता है : और मै तेरे (सर्प) और इस स्त्री के बीच में, और **तेरे वंश** और **इसके वंश** के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।

- सर्प के वंश से अभिप्राय उसकी संतानों (यूहन्ना 8:44) से है या मसीह विरोधी से, या शायद दोनों से।

- स्त्री का वंश (बीज) नहीं होता, अत: यह यीशु मसीह के कुँवारी जन्म के विषय में बात हो रही है।

(17) पर मैं यह कहता हूँ की जो **वाचा** परमेश्वर ने पहिले से पक्की की थी, उस को **व्यवस्था** चार सौ तीस बरस के **बाद** आकर **नहीं टाल** (रद्द या समाप्त) देती, कि **प्रतिज्ञा** व्यर्थ ठहरे।

- यह बहुत महत्वपूर्ण बिंदु है। और इसकी पुष्टि 2 कुरिन्थियों 1:20 करता है
  क्योंकि परमेश्वर की जितनी **प्रतिज्ञाएं** हैं, वे सब उसी में **हाँ** (वे निश्चित हैं) **के साथ हैं:** इसलिये उसके द्वारा हमारी आमीन (उसके अचूक वचन में हमारी सहमति) भी हुई, कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। वाचा और प्रतिज्ञा अभी भी कायम हैं।

(18) क्योंकि **यदि** मीरास व्यवस्था से मिली है, तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं, **परन्तु** परमेश्वर ने अब्राहीम को प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है।

- पौलुस यह कह रहा है कि परमेश्वर 430 वर्ष बाद भी अपनी प्रतिज्ञाओं को न तो बदलता है और न ही उनमें कुछ शर्तें जोड़ता है। उसकी वाचाएँ और प्रतिज्ञाएँ अभी भी बनी हुई हैं।

यह एक प्रश्न को उत्पन्न करता है :
(19) **तब फिर व्यवस्था क्या रही?** वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस **वंश** के आने तक रहे, **जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी,** और वह स्वर्गदूतों के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई।

- बाद में दी गई, यहाँ यूनानी शब्द “प्रोस्तिथेमी” का इस्तेमाल किया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ **“किसी चीज़ को डालना या रख देना” है।**

- वह अपराधों के कारण बाद में दी गई का अर्थ :

1. लोग स्पष्ट रीति से समझें **कि पाप क्या है** और पहचानें कि उनका **स्वभाव पापी है** और वे **अपने चरित्र को बदल नहीं सकते** और परमेश्वर के सम्मुख अपने आप को **धर्मी नहीं ठहरा सकते हैं।** इसे इन पदों में स्पष्ट रीति से देखा जा सकता है:

   रोमियों 3:19-20 हम जानते हैं, कि **व्यवस्था** जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, **जो व्यवस्था के आधीन हैं: इसलिये** कि हर एक मुंह **बन्द** किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के **दण्ड के योग्य ठहरे**। (20) क्योंकि व्यवस्था के **कामों** से कोई **प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा,** इसलिये कि **व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।**

2. मनुष्य के पापी स्वभाव को **नियंत्रित** करने के लिए
   व्यवस्था को जानना और पवित्र आत्मा के द्वारा कायल करना वास्तव में विश्वासियों में और कुछ हद तक अविश्वासियों में भी, एक नियंत्रण शक्ति है (यूहन्ना 16:8-11)। हमारी लोक व्यवस्था हमें नियंत्रित करती हैं क्योंकि हम जेल जाने और दंड देने से डरते हैं। इस नियंत्रण को कभी भी धार्मिकता नहीं माना जा सकता, बल्कि यह हमारी अधार्मिकता का प्रमाण है। यदि हमें नियंत्रित करने के लिए ट्रैफिक लाइट नहीं होंगी तो बहुत से लोग चौराहों पर घायल हो जाएंगे या मर जाएंगे। इसलिए कि परमेश्वर चिंता करता है, उसने हमें व्यवस्था दी है ताकि हम अपने को और दुसरे को घायल करने से बचें। परंतु व्यवस्था हमें धर्मी नहीं ठहराती। व्यवस्था मनुष्य के ह्रदय को बदलती नहीं या बदल नहीं सकती।

   मत्ती 15:19 क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा **मन ही में से निकलती है**।

3. **हम सबको अपने पाप प्रकट कराने के लिए,** कि हम बुरे, दुष्ट, घृणित, और पथभ्रष्ट हैं और हमें **ज़रूरत** है कि हम **अपने** पापों की **क्षमा** और उसके परिणामों से स्वयं को बचाने के लिए परमेश्वर पर निर्भर हों।

फरीसी यह सोचते थे कि पूर्ण आज्ञाकारिता के द्वारा वे व्यवस्था द्वारा धर्मी ठहराए जा सकते हैं और परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष खड़े हो सकते हैं। परंतु पौलुस ने उनकी इस सोच का विरोध किया:

रोमियों 3:20 क्योंकि उसकी दृष्टि में **कोई प्राणी** व्यवस्था के कार्यों से धर्मी नहीं ठहरेगा; **क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का बोध होता है।**

रोमियों 7:7-8 व्यवस्था के बिना **मैं पाप को न जान पाता**, क्योंकि यदि व्यवस्था न कहती, “लालच मत कर,” तो मैं लालच के विषय में न जान पाता। (8) परन्तु पाप ने इस आज्ञा के द्वारा अवसर पाकर मुझ में हर प्रकार का लालच उत्पन्न किया, **क्योंकि व्यवस्था के बिना पाप मृतक है**।
रोमियों 7:13 परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ **कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे।**

- वह स्वर्गदूतों के द्वारा .. **ठहराई** गई (क्रमानुसार निर्धारित किया)

- एक मध्यस्थ के हाथ (कोई ऐसा व्यक्ति जो अलग अलग समूहों के बीच खड़ा होता है ताकि उन्हें एक साथ ले आए)

(20) **मध्यस्थ** तो एक का नहीं होता, परन्तु परमेश्वर एक ही है।

- यह मध्यस्थ कौन है जिसका ज़िक्र पौलुस कर रहा है? इसकी तीन संभावनाएं है :

1. **मसीह** की ओर संकेत है जो “परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ” है (1 तीमु 2:5) **परंतु** यीशु “नई वाचा का मध्यस्थ” है (इब्रानियों 8:6; 9:15; 12:24), इसलिए ऐसा प्रतीत **नहीं** होता कि वह मसीह को मध्यस्थ कह रहा है।

2. यहूदियों को इस बात का दृढ़ विश्वास था कि व्यवस्था की मध्यस्थता **स्वर्गदूत** करते हैं।

   प्रेरितों के काम 7:53 तुम ने **स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई** हुई **व्यवस्था** तो पाई

   इब्रानियों 2:2 क्योंकि जो **वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था**। जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला

लगता है, पौलुस का तर्क यह था : अब्राहम के साथ वाचा में, परमेश्वर ने सीधे मानवजाति के साथ व्यवहार किया, परंतु मूसा की व्यवस्था के साथ उसने सीधे नहीं परंतु स्वर्गदूतों को मध्यस्थ बना कर व्यवहार किया। इस कारण व्यवस्था वाचा से कम है।

व्यवस्था अच्छी है पर कमज़ोर है (3:21-22)

पौलुस जिसने रब्बी के समान प्रशिक्षण पाया था, व्यवस्था के लिए बड़ा आदर रखता था (रोमियों 7:12; 1 तिमु 1:8)। **व्यवस्था बुरी नहीं है,** वह केवल **अधूरी** है और **कभी भी विश्वास का स्थान नहीं ले सकती**। और यकीनन व्यवस्था ऐसा नहीं कर सकती।

(21) तो क्या **व्यवस्था** परमेश्वर की **प्रतिज्ञाओं के विरोध में है? कदापि न हो**? क्योंकि **यदि** ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती, तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती। (22) परन्तु पवित्र शास्त्र ने सब को पाप के आधीन कर दिया, ताकि वह **प्रतिज्ञा** जिस का आधार **यीशु मसीह पर विश्वास करना** है, **विश्वास करनेवालों के लिये पूरी हो जाए।।**

एक संरक्षक के रूप में व्यवस्था (3:23-25)

अत: व्यवस्था का क्या कार्य था? जब तक **मसीह में विश्वास न आए,** तब तक हमारे **पापी होने** का **प्रकाशन** देना और उस पर **नियंत्रण** करना।

(23) पर **विश्वास के आने से पहले व्यवस्था की अधीनता** में हमारी रखवाली होती थी, और उस **विश्वास** के आने तक जो प्रगट होनेवाला था, हम उसी के बन्धन में रहे। (24) इसलिये **व्यवस्था** मसीह तक पहुंचाने को हमारा **शिक्षक** हुई है, कि हम **विश्वास से धर्मी ठहरें।** (25) परन्तु **जब विश्वास आ चुका**, तो हम अब शिक्षक के आधीन न रहे।

- **विश्वास के आने से पहले** ... परन्तु जब **विश्वास आ चुका,** यह कथन दर्शाते हैं कि "विश्वास हमारे पास आता है", जो हमारे भीतर से उत्पन्न नहीं होता (2 पतरस 1:1; इब्रानियों 12:2; लुका 22:32 स्थिर करने वाला; रोमियों 10:17 सुनना सीमित है : यूहन्ना 10:26-27; लूका 8:10)

- बन्धन में रहे - व्यवस्था ने हमारे पापी स्वभाव को बाँध कर रखा।

- **शिक्षक** - मूल यूनानी शब्द में इसका अर्थ है "जो किसी बच्चे को दिशा दिखाए और **प्रशिक्षण** दे"। परमेश्वर का परिवार है, "जगत की उत्पत्ति से **चुना** हुआ" (इफि 1:4) और जो व्यवस्था उन्हें दी गई वह "बाल प्रशिक्षक" के रूप में थी।

> "बाल प्रशिक्षक" ऐसा व्यक्ति है जिसका कर्तव्य बच्चों को शिष्टाचार सिखाना, और स्कूल के पाठ सिखाना है। वह बच्चों की स्वतंत्रता पर आवश्यक नियंत्रण लगाता है जब तक कि वे उस उम्र तक नहीं पहुँच जाते कि उसे इस बात का भरोसा हो जाए कि वे अपनी स्वतंत्रता जिम्मेदारी के साथ प्रयोग करेंगे।

- इसका उद्देश्य : हमें **मसीह में लाना** या उसके पास ले जाना

- और जब हम मसीह के पास आते हैं, तो हम **विश्वास से धर्मी ठहरते** हैं और उस समय "पवित्र आत्मा" हमारे **भीतर** आता है और **हम "बच्चे" होने से "पुत्र" में बदल जाते हैं।**

(26) क्योंकि तुम सब उस **विश्वास** करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, **परमेश्वर की सन्तान हो।**

- यीशु मसीह का पवित्र आत्मा (रोमियों 8:9; 1 पतरस 1:11) अब हमारे **भीतर** है ताकि हमें सम्पूर्ण सत्य में ले जाए, उसमें अगुवाई करे और उसके बारे में बताए और यह कि किस प्रकार पाप रहित जीवन जी कर, **परमेश्वर** के सम्मुख उसको भावती हुई चाल चलें।

> इफिसियों 4:14-15 ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों; वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ।

- पुरानी वाचा में व्यवस्था हमारे "बाहर" थी, न कि हमारे "मनों में", वह हमारा भाग नहीं थी। परंतु इसकी भविष्यवाणी की गई कि यह हमारे भीतर होगी :

यिर्मयाह 31:33 ... **मैं अपनी व्यवस्था उनके मनों में डालूंगा** और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा तथा वे मेरी प्रजा ठहरेंगे।

यहेजकेल 36:26-28 और फिर मैं **तुम्हें एक नया हृदय दूंगा** और **तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करूंगा ...** मैं अपना **आत्मा तुम में डालूंगा** और तुम्हें **अपनी विधियों पर चलाऊंगा** और **तुम** मेरे नियमों का सावधानी से पालन करोगे।

एक "पुत्र" वो है जो अब बड़ा हो चुका है। जब पवित्र आत्मा हमारे "**मन में**" वास करता है तो हम सहज रूप से, अपने भीतर से, जान जाते हैं कि क्या गलत है और क्या सही तथा हमें उस पर किस प्रकार से प्रतिक्रिया करनी चाहिए और हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

  - इस विषय पर और अधिक गहरा अध्ययन के लिए www.treasurehisword.com पर "लेपालकपन" के नोट्स देखें

(27) और तुम में से जितनों ने मसीह में **बपतिस्मा** लिया है उन्हों ने मसीह को पहन लिया है।

- मूल यूनानी भाषा में "बपतिस्मा" का अर्थ "रख देना" है, इस परिणाम के साथ डूब जाना या डुबकी लगाना कि अब हम नई स्थिति में हैं। पहले जैसे नहीं। और इस का परिणाम यह है :

(28) अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि **तुम सब मसीह यीशु में एक हो**।

- यह नई स्थिति उन सभी अन्य पदों को जिन पर हम पहले थे हटा कर स्थान ले लेती है और प्रधानता प्राप्त करती है। जहाँ तक परमेश्वर का सम्बन्ध है, राष्ट्रीयता समाप्त हो जाती है; वर्ग भेद समाप्त हो जाते हैं, लिंग भेद नहीं रहते। यह सब इसलिए कि तुम **सब** मसीह यीशु में **एक हो**। सब एक समान हो जाते हैं।

(29) **और** यदि तुम मसीह के हो, तो **अब्राहम के वंश** और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।।

- क्योंकि हमने विश्वास किया, और पवित्र आत्मा हम में वास करता है, यह इस बाद को सिद्ध करता है कि : तुम इब्राहीम के वंश हो।

  रोमियों 4:16 इस कारण, प्रतिज्ञा अनुग्रह के अनुसार विश्वास से मिलती है जिस से कि सब वंशजों के लिए वह निश्चित हो जाए - न केवल उनके लिए जो व्यवस्था वाले हैं, परन्तु उनके लिए भी जो अब्राहम के समान विश्वास वाले हैं, जो हम सब का पिता है

  अब्राहम इस्राएल जाति का **स्वाभाविक** पिता जो व्यवस्था वाले हैं। और वह उन सबका जो विश्वास वाले हैं **आत्मिक** पिता है।

- प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस व्यवस्था के अनुसार नहीं (देखें 3:18)
  (यशायाह 44:3; योएल 2:28; रोमियों 9:8-11; प्रेरितों के काम 2:38)

गलातियों 4

(4:1) मैं यह कहता हूँ कि वारिस जब तक **बालक** है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास में कोई भेद नहीं। (2) परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक संरक्षकों और प्रबन्धकों के **वश** में रहता है।

- वारिस जब तक बालक है - वह अपने पिता "का" है, परंतु जब तक आत्मा उस व्यक्ति में वास नहीं करता वह बिना आत्मिक समझ के बालक बना रहता है और इसलिए उसे संरक्षकों और प्रबन्धकों के वश में रहने की आवश्यकता होती है - "बाल प्रशिक्षक" के रूप में व्यवस्था की तथा अन्य लोगों की आधीनता में रहना।

- पिता के ठहराए हुए समय तक यहाँ बार-मित्सवाह का जिक्र है जहाँ एक यहूदी बालक "नियमित उम्र" पर पहुँचने के बाद बालक नहीं समझा जाता। इसी प्रकार यही आत्मिक "पुत्र बनने" पर भी लागू होता है।

3 वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे। 4 परन्तु जब
समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, 5
ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। 6इसलिए कि
तुम पुत्र हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा! हे पिता!' कह कर पुकारता है, हमारे हृदयों
में भेजा है। 7 इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी
हुआ। 8 पहले तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं, 9 पर अब जो तुम
ने परमेश्वर को पहचान लिया वरन् परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा
की बातों की ओर क्यों फिरते हो, जिनके तुम दोबारा दास होना चाहते हो? 10 तुम दिनों और महीनों और

नियत समयों और वर्षों को मानते हो। 11 मैं तुम्हारे विषय में डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि जो परिश्रम मैं ने
तुम्हारे लिये किया है वह व्यर्थ ठहरे। 12 हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ, तुम *मेरे* समान हो जाओ;
क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान *हो गया* हूँ; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। 13 पर तुम जानते हो कि पहले-
पहल मैं ने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया। 14 और तुम ने मेरी शारीरिक दशा को जो
तुम्हारी परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना; न उससे घृणा की; और परमेश्वर के दूत वरन् *स्वयं* मसीह के
समान मुझे ग्रहण किया। 15 अब तुम्हारे आनन्द की वह भावना कहां गई? इस बात का मैं साक्षी हूं कि यदि
सम्भव होता तो तुम अपनी आंखें तक निकाल कर मुझे दे देते। 16 तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं
तुम्हारा बैरी बन गया हूँ? 17 वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं, पर भले उद्देश्य से नहीं; वरन् तुम्हें अलग
करना चाहते हैं कि तुम उन्हीं को मित्र बना लो। 18 पर यह भी अच्छा है कि भली बात में हर समय मित्र
बनाने का यत्न किया जाए, न केवल उसी समय कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूँ। 19 हे मेरे बालको, जब तक
तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ। 20 इच्छा तो
यह होती है कि अब तुम्हारे पास आकर और ही प्रकार से बोलूँ, क्योंकि तुम्हारे विषय में मैं उलझन में हूँ।